International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 629-631

भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौतियाँ

डॉ० रमा सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

आज अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की व्यवस्था बदल चुकी है। 1947 की परिस्थितियाँ 2018 से अलग हो गयी है। 1947 में आदर्शवाद भारत की मूल नीति थी। सोवियत संघ एवं अमरीका के मध्य द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से ही तनाव विद्यमान था जो समय के साथ बढ़ा और घटा भी परन्तु 1990 के बाद होने वाले परिवर्तन निम्नलिखित दिखेः–

1. सोवियत संघ का विखंडन– सोवियत संघ भारत पर अपना प्रमुख प्रभाव डालता है। इसने भारत–पाकिस्तान युद्ध के समय बिना माँगे सहायता की तथा सदैव भारत के साथ देखा जो भारत के साथ 1971 की सन्धि के रूप में दिखती है। परन्तु यह नयी चुनौती भारत के राष्ट्र हित के लक्ष्यों को प्राप्त करने की स्थिति में ज्यादा कारगर नहीं थी, क्योंकि वैश्विक परिदृश्य अमरीका के पक्ष में थे एवं रूस का विखंडन होता है। दूरदर्शिता एवं गुटनिरपेक्ष आज भी भारत की नीति रही है। परन्तु आलोचक मानते हैं कि भारत विशिष्ट गुट के रूप में नहीं उभर पाया है। किसी एक देश की नीति भारत के हित में नहीं थी; न पूँजीवादी व्यवस्था और न ही साम्यवादी व्यवस्था। अतः भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति अपनायी।
2. आठ NAM सदस्यों ने अमरीकी IAEA प्रस्ताव पर समर्थन किया है। NAM आदर्शवाद का प्रतीक है। परन्तु आज नई दिशा में त्याग से यथार्थवादी नीति अपनाने की बात की जा रही है। भारत का दृष्टिकोण क्या हो? विचारणीय प्रश्न है। विश्व युद्ध के परिणामों से भयभीत विश्व के देश वैश्वीकरण की ओर बढ़े हैं।
3. वैश्वीकरण से जुड़े अनेक मुद्दे भारत को दबाव में ले आते हैं। यह भारत के हित में TRIPS, TRIMS नहीं है। आज अमरीकी प्रभुत्व हर जगह बढ़ रहा है। गुजराल के शब्दों में ‘‘वैश्वीकरण गाँव का यह मतलब नहीं की हम एक सरपंच की चौधराहट में रहे।’’ जबकि आज के UNO का मतलब अमेरिका विश्व राज्यों के नीति का अर्थ अमेरिका हो गया है।
4. आतंकवाद आज विश्व में व्याप्त है विश्व शान्ति भारत की विदेशनीति का मूल वाक्य रहा है। अतः भारत ऐसे क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़े जो आतंकवाद खत्म कर सके।
5. पर्यावरण असन्तुलन बड़े राज्यों की देन है आज की बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। पर्यावरण असंतुलन से प्रदूषण फैल रहा है। आर्थिक असंतुलन से क्योटो प्रोटोकाल भी लागू न हो सका। विकसित देश पर्यावरण असंतुलन विकासशील देशों पर थोप रहे हैं। कृषि पर इसका ज्यादा प्रभाव पड़ रहा है। 1945–2006 तक शक्ति का पैमाना बदल रहा है। 1945 में विचाराधारा की शक्ति थी। सैनिक शक्ति का प्रभाव दिखायी पड़ रहा था। यह हथियारों की प्रतिद्वन्दिता दिखायी पड़ती है। End of Ideology, End of History की बात 1990 में की गयी। हेनरी किसींजर कहते है कि ‘‘आज समाजवाद ने पूँजीवाद एवं पूँजीवाद ने समाज को अपना लिया।’’ आज अमरीका सबसे शक्तिशाली देश है। आर्थिक शक्ति में जर्मनी, जापान, यूरोपीय यूनियन काफी विकसित है। लेकिन पर्यावरण असन्तुलन को बढ़ाने का ठीकरा इन राष्ट्रो पर डाला जा रहा है। भारत को प्रत्येक छोटे विकसित राष्ट्रों के लिए लड़ना है।
6. आज दो विचारधारा है–
    1. Integration- एकीकरण बढ़ रहा है। जैसे–यूरोपीय यूनियन।
    2. Disintegration- विश्व में अलगाव बढ़ रहा है।

दोनों विचार धाराएं विपरीत दिशा में बढ़ रही है। एकीकरण आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए हो रही है। विखंडन की प्रक्रिया में सैनिक होड़ दिखा है। सोवियत संघ का विखंडन शुरू हुआ था। यह आर्थिक कारण से हुआ था। क्रान्ति ऊपर से थोपी गयी थी। लेनिन कहता है कि–‘‘सभी शक्ति जनता से आनी चाहिए।’’ यह नीचे से अपनानी चाहिए। बाद में CPSU की नेतागर्दी देखी थी। स्ट्राबिन में ‘दोहरी अधीनता’ का सिद्धान्त दिया।

सोवियत संघ (USSR) राज्य एवं दल दोनों के आदेश मानता था। ऊपर पार्टी एवं राज्य दोनों का मिलाप हो रहा था। साम्यवादी दल का नेता एवं पार्टी का अध्यक्ष ही दोनों होता था। गोर्वाचोव ने ग्लासनोस्ट एवं पेरेस्तोइका अपनाया। गोर्वाचोच ने दिखाया की बाहर की दुनिया बुर्जुआ है। परन्तु लोगों ने बाहर देखा तो काफी ठीक महसूस किया। USSR की आर्थिक स्थिति खराब थी। सभी सुविधाएं दल के लिए थी। इस बदलाव के बाद आज विश्व में पुराने शत्रु मित्र हो गये हैं। जापान, अमरीका की आर्थिक व्यवस्था को संभाले हैं। OPEC, ASIAN, EU, APEC, NAFTA लागू हो चुकी है। भारत को SAFTA लागू करनी चाहिए। हमें आर्थिक पूर्ति की जरूरत है। लुक ईस्ट एवं लुक वेस्ट दोनों अपनानी चाहिए।

इराक, इजराइल, फिलीस्तीन जैसे छोटे लड़ाकू देश भी आज विकसित हुए हैं। भारत को नीति में पुर्नजागरण करना पड़ेगा। जैसे–

1. विदेश नीति के सामने आवश्यकता है कि हम परिवर्तन के अनुसार सुनियोजित करने का प्रयास करें।
2. भारत की तेल पर निर्भरता हैं। 70 प्रतिशत आयात किया जाता है। 54–67 प्रतिशत तेल पश्चिम एशिया से आता है। खाड़ी के देश 2020 तक विश्व के 70 प्रतिशत उत्पादक देश बन जायेगे। भारत एक सकारात्मक नीति के लिए पश्चिम की उपेक्षा नहीं कर सकता है। NAM की आलोचना ठीक नहीं है परिवर्तन किये जाने चाहिए। 37 लाख भारतवासी पश्चिमी एशिया में रहते है जो प्रतिवर्ष 8 बिलियन डॉलर भारत भेजते है जो भुगतान सतुलन को बनाये रखने के लिए आवश्यक है। जिस पर टैक्स नहीं लगता है। अप्रवासी भारत दिवस मनाया

जाता है। तेल से ज्यादा महत्वपूर्ण प्राकृतिक गैस के एवं कूटनीति से ज्यादा करना चाहिए कि हम सुरक्षित रखे। बिना रूकावट के ऊर्जा की सुविधा मिली है। भारत को बड़े, देशों की अपेक्षा इराक, इजराइल, कतर, अरब देशों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

3. स्मलिंग, एड्स एवं नाकोटिक्स आदि को रोकने के लिए निश्चित तौर पर काम करना होगा यह सामान्तर अर्थव्यवस्था होती है जो राष्ट्रीय बचत में सेंध लगाती है। हर जगह मादक हथियारों का धन्धा होता है। काला धन पर आज सरकार द्वारा रोक लगायी गयी है इसे प्रभावशाली बनाना चाहिए। कूटनीति बनानी होगी। काला धन का राष्ट्र विरोधी कार्य में प्रयोग होता है। चीन, नेपाल के सामान भारत के बाजार में भी जब जनता ने इसको स्वीकृति दी है तो समस्या काफी गम्भीर है। क्षेत्रों की प्राइवेट सुरक्षा आवश्यक है।
4. पड़ोसी देशों के साथ मिलकर सुरक्षा नीति बनाये तथा अर्थव्यवस्था के साथ पर्यावरणीय असंतुलन हटाया जाय। South Asia को हमेशा असुरक्षा भारत से दिखता है। ये समीकरण बदलना चाहिए। भारतीय तुष्टीकरण की नीति कम करना चाहिए।
5. बाहरी मुल्कों की पैठ का सामना करना चाहिए। क्षेत्रीय व्यवस्था को मजबूत कर अन्तर्राष्ट्रीय पैठ को रोकना होगा। इसके लिए कड़े कानूनों की अवश्यकता है।
6. चीन काफी महत्वपूर्ण है। चीन सुपरपॉवर है। चीन–भारतीय साम्राज्य काफी कूटनीतिक रहेगी एवं भारत ठीक रास्ते पर चल रहा है।
7. दोनों को ज्यादा लाभ तब होगा जब रूस एवं भारत काफी करीब आ जाये। जबकि भारत को आज रूस से खतरा है क्योंकि यू0एस0ए0 ने प्रभावित किया है। ईरान कश्मीर मुद्दे पर हमेशा पाक का साथ देता है। आज संवेगों पर नियंत्रण करना चाहिए। हम अमरीका को यह बहाना दे रहे हैं कि मुसलमान काफी उग्र (Volatitele Community) है।

भारतीय विदेश नीति प्रतिक्रियावादी रही है। भारतीय विदेश नीति पूर्वानुमान पर आधारित रही है। USSR के विघटन का अंदाज नहीं लगा सका था। येत्तसिन से भारत सम्पर्क में नहीं था।

हमको पहल करनी चाहिए थी। इजराइल के विदेश मंत्री चुपके से भारत आये। हम सारे देशों का सिर्फ अनुकरण कर रहे हैं। विश्व के प्रमुख मद्दें जिनमें– Security, Development & World Order (NI) एवं साधन Defence, Diplomacy & Communication भी थे। मुख्य चार तत्वों–Social, Political , Democracy, Securlaism, Socio Federatlism भारतीय मूल है। ये विकास की प्रक्रिया में देखी जानी चाहिए क्योंकि किसी का भी कही राज्य के औचित्य को प्रभावित रखेगा एवं सुरक्षा के लिए चुनौती बन जायेगा।

सुरक्षा एवं विकास (Secruity & Development) में घनिष्ठ सम्बन्ध है एक दूसरे से ज्यादा सम्बन्ध है। (1) Economic Growth through Agriculture & Industry (2) Modernisation (विश्व में नये–नये तरीको को अपनाना चाहिए) (3) Democratisation (4) National Integration (5) Nation Building Process (6) धर्मनिरपेक्षता में यदि बाधा आती है तो राष्ट्र को खतरा है।

1950 में राज्य निर्माण (State Building) प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। जबकि राष्ट्र निर्माण (Nation Building) पूरा नहीं हुआ है। आज भी निम्नलिखित बाधायें उपस्थित हैं–

- Law & Order Problem.
- Proxy war.
- Low intensity conflict.
- Terrorist attacks.
- Insurgency.

ये वो मूल्य हैं जो भारतीय राज्य को खोखला बना रहे है। ये राजनीतिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक का परिणाम है।

राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियों के लिए प्रतिक्रिया बनानी पड़ती है। शीतयुद्ध के बाद सैनिक कम आर्थिक चुनौती ज्यादा पायी जाती है। जड़ की समस्या असमानता और आर्थिक अनियमितता ये दो Freedom from fear और आवश्यकता से सुरक्षा आयाम है। भारत में जनसंख्या ज्यादा है। जबकि आर्थिक वृद्धि कम हुई है जिसका परिणाम यह है कि आज देश में सामाजिक सम्बन्धों में गिरावट आयी है। इससे Social Coherence को नुकसान हुआ है। भारत में Unity in Diversity है इसीलिए भारत Multi ethnic, Multi religions, Developing Country है। भारत में संघीय व्यवस्था है जबकि राजनीति सम्प्रदाय एवं जाति पर आधारित है। यह अन्तर राजव्यवस्था को असंतुलित करने का महत्वपूर्ण कारण है। जातिवाद ने Politcal Game of selfishdness किया है। यह आधुनिकीकरण पर विपरीत प्रभाव डालता दिखता है। यह हमें मध्ययुगी व्यवस्था में ले जाता है। सउदी अरब में सड़क बनाने के लिए मजिस्द हटा दिया गया। सिंगापुर में जाति, धर्म के आधार पर अंतर नहीं पाया जाता है। हर आदमी का आर्थिक लक्ष्य होना चाहिए। कमजोर राष्ट्र हमेशा बलशाली राष्ट्रों के अन्दर निहित रहता है। लेकिन भारत संविधान में जाति नस्ल, धर्म लिंग के भेदभाव का विरोध करता है परन्तु व्यवहार में आज भी उससे दूर नहीं हो सके हैं।

राजनीतिक अस्थिरता निश्चित तौर से समाज की कानून व्यवस्था को ध्वस्त करती है। दबंग लोग चुनाव में जीतते हैं। अर्थात कानून के समक्ष समानता (Equality before law) नहीं है। यही अस्थिरता का कारण है। जिससे हिंसा बढ़ती है। सम्प्रदायवाद आज राजनीति का घिनौना साधन बन गया है। यह राजनीति एवं धर्म का शोषण करता है एवं राजनैतिक सहअस्तित्व को भंग करता है। भारत की तकनीकी क्षमता ने आंकाक्षाओं को जागृत किया है। Satelite Basel System ने जागृति आयी है। दुनिया में क्या चल रहा है, यह देखा जा सकता है। सांस्कृति–मनोवैज्ञानिक अस्थिरता तभी आयेगी, यदि सावधानी नहीं बरती जाती। यह स्पष्ट है कि राष्ट्र विकास में बेरोजगार समाज में कुंठाओं को जन्म देती है एवं जागरूक नैतिकतावादी बेरोजगार युवक साम्प्रदायिक, राष्ट्र विरोधी शक्ति में फंस जाता है। मुस्लिम युवा आतंकवादियों के जाल में आ जाते हैं और हिन्दू युवा अंधविश्वासों ने। क्योंकि सबसे ज्यादा बेरोजगार मुस्लिम है। सरकार को चाहिए कि नौकरी बनाये जिससे राष्ट्रीय विकास में सहयोग मिल सके। जम्मू एवं कश्मीर एवं पंजाब में आतंकवादियों में सामंजस्य है। कार सेवकों का उम्र भी 20–25 वर्ष थी। सरकार को इसके लिए नये कार्य क्षेत्र बढ़ाने चाहिए। आंकाक्षाएं संतुष्टि में परिवर्तित नहीं होती है तो राज्य औचित्य खो देता है। सुरक्षा का खतरा देश को बाहर से नहीं वरन् आन्तरिक सुरक्षा का है। भारत में 35 वर्ष युद्ध नहीं हुआ परन्तु शान्ति नहीं रही है। संतुष्टि (Satisfaction) पूरी नहीं हो रही है अतः राज्य मजबूत नहीं बन सकता है। सड़कों की स्थिति ठीक नही है बिजली 60 प्रतिशत लोगों के पास नहीं है। बिजली का उत्पादन में 22 प्रतिशत नुकसान होता है। 40 प्रतिशत परिवारों के पास शुद्ध पानी नहीं है। 12 प्रतिशत परिवार पानी से बीमारियाँ झेल रहे हैं। 52 प्रतिशत जनसंख्या के पास शौचालय नहीं है। 35 प्रतिशत भारत झोपड़ पट्टी में रहता है। Infotech में भी भारत Super power नहीं बन सकता जब तक की ऊर्जा की आपूर्ति ठीक नहीं होती।

स्वतंत्रता के बाद 8 प्रतिशत हाई–वे बने हैं जबकि ट्रैफिक बढ़ा है। भारत सरकार ने अमरीकन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन से समस्याओं की और इशारा किया था। उन्होंने राष्ट्र निर्माण की बात की थी।

पर्यावरण, बीमारी, स्वच्छ, पानी की तरफ इशारा किया था। The enemy withing the threat is important हमें राष्ट्र निर्माण में आगे बढ़ना चाहिए। सारी खराब प्रवृत्तियाँ खुद खत्म हो जायेगी। भारत सशक्त राष्ट्र बनेगा परन्तु भारतीय विदेश नीति आन्तरिक चुनौतियों के साथ समस्या के रूप में हमारे सामने है।

सन्दर्भ

1. डॉ0 बी0एल0 फाड़िया : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2017
2. पुष्पेश पंतः अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2014
3. यू0आर0घईः अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2013
4. तेजस्कर पाण्डेय, सविता पाण्डेयः भारत में सामाजिक समस्याएँ, 2012
5. डॉ0 अश्विनी कुमार सिंह : कश्मीर समस्या, 2012
6. सुषमा गर्ग : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, 2014–15
7. डॉ0 दीनाथ शर्मा : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2013
8. रामसूरत पाण्डेय : राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2014